व्यक्ति केंद्रित चिंतन ही है समस्याओं का कारण : प्रो. गिरीश्वर मिश्र

हिंदी विवि में मनाई गई स्वामी विवेकानन्द की 153 वीं जयंती

वर्धा, 12 जनवरी, 2016 : आधुनिक युग में ज्ञान, उपयोग और उपभोग व्यक्ति केंद्रित हो गई है। आज मैं, मैं का सम्राज्य है। व्यक्ति केंद्रित चिंतन ही बहुत सारी समस्याओं का कारण है। आज चुनौती है कि हम कैसे समन्वय के भाव से एक साथ जिंदगी जियें।

स्वामी विवेकानन्द का विचार सारी सृष्टि में एक भाव देखने वाला विचार है।

उक्त विचार कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किए। वे स्वामी विवेकानन्द की 153 वीं जन्म दिवस के अवसर पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी समाज कार्य केंद्र द्वारा 'वेदान्त का तत्वज्ञान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान अध्यक्षीय उदबोधन में बोल रहे थे। इस अवसर पर मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो.मनोज कुमार, शिक्षा विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. अरबिंद झा, संस्कृति विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. लेला कारूण्यकरा मंचस्थ थे।

कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने आगे कहा कि अंग्रेजों के शासन काल में एक ऐसे व्यक्ति का उदय होता है जिसके धमनियों में स्वतंत्रता समाई हुई थी। उन्होंने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के तत्व को परंपरा में निहित पाया। हिन्दू धर्म पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दू शब्द बाद में प्रचलित हुआ। ऐतिहासिक दृष्टि से भारत में वैदिक चिंतन पैगम्बर या व्यक्ति पर निर्भर नहीं करता- वह सनातन है, उसमें प्रकृति की बात है, सृष्टि की बात है। उन्होंने कहा कि शांति का अर्थ शांत होना नहीं है, सभी अपने गति में समर्थ हो। यह सर्व समावेशी दर्शन है। इसमें व्यापक दृष्टिकोण विकसित करने की दृष्टि है। विवेकानन्द के विचार प्रेरणादायी हैं, वह हृदय को आनन्दित करता है। वेदान्त की कई शाखाए हैं। कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्ड सत्य के विश्लेषण से जुड़ा हुआ है। अपने उदबोधन में उन्होंने कहा कि गंगा सिर्फ नदी नहीं है बल्कि यह एक विचार है क्योंकि यह बड़े भूभाग का सिंचन करती है। मनुष्य स्वार्थवश इसे गंदा कर रहा है। उपभोक्तावादी दौर में हमने अपनी आत्मा को बंद कर रखा है, विवेकानन्द उसे

खोलने की बात करते हैं।

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. मनोज कुमार ने स्वामी विवेकानन्द के दर्शन को गांधी विचार से जोड़ते हुए कहा कि वेदान्त अवैयक्तिक है लेकिन उसका व्यक्ति धर्म से विरोध नहीं है। वेदान्त का उनसे भी झगड़ा नहीं जो मनुष्य की दिव्यता को नहीं समझते। विवेकानन्द हिन्दुओं की आध्यात्मिकता, बौद्धों की जीव-दया, ईसाइयों की क्रियाशीलता एवं मुस्लिमों के बंधुत्व को व्यवहारिक जीवन में अपनाने का संदेश देते हैं। वे सार्वभौम धर्म बनाना चाहते थे। विवेकानन्द धार्मिक सहिष्णुता और आत्मा की एकता में विश्वास करते हैं। वेदान्त सहिष्णुता का संदेश देता है। धर्म बुद्धिगम्यनहीं बल्कि हृदयगम्य है।

शिक्षा विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. अरविंद झा ने विमर्श को आगे बढ़ाते हुए कहा कि हम अपनी पहचान खोते जाते हैं। विवेकानन्द हमें 'स्व' को खत्म करने और 'समष्टि' में अपने को मिला देने की सीख देते हैं। एकाग्रता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि दरअसल एकाग्रता मानसिक शक्ति को इकट्ठा करना है। सफलता एकाग्रता का परिणाम है। उन्होने विवेकानन्द के ब्रह्मचर्य, आत्मा और चरित्र निर्माण संबंधी विचारों को वर्तमान संदर्भ मे विश्लेषित किया। संस्कृति विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. लेला कारूण्यकरा ने कहा कि विवेकानन्द उस समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं जो वंचितों की आवाज को मुख्यधारा में लाने के लिए प्रयासरत हैं। हमें विवेकानन्द के दर्शन को संपूर्णता में समझने की जरूरत है।

इस दौरान जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. कृपाशंकर चौबे ने विवेकानन्द के कन्याकुमारी का संकल्प, भारत भ्रमण और उनके वैश्विक एवं सार्वभौमिक चिंतनको नये ढ़ंग से विश्लेषित किया। विकास एवं शांति अध्ययन के प्राध्यापक डॉ. मनोज राय ने कहा कि विवेकानन्द आचरण में विचारों को उतारने की सीख देते हैं। हमें जीवन में उनके विचारों को न केवल आत्मसात करने की जरूरत है बल्कि हमें एक बेहतर समाज के निर्माण में नवाचारी विचारों को अपनाने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी का संचालन समाज कार्य केंद्र के सहायक प्रोफेसर डॉ. मिथिलेश कुमार ने किया तथा शिक्षा विद्यापीठ के सह प्रोफेसर डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक कर्मी, शोधार्थी व विद्यार्थी बड़ी संख्या में मौजूद थे।